Impact Factor - 6.261 ISSN - 2348-7143

INTERNATIONAL RESEARCH FELLOWS ASSOCIATION

RESEARCH JOURNEY

INTERNATIONAL E-RESEARCH JOURNAL

PEER REFREED & INDEXED JOURNAL

February - 2019 Special Issue- 105 (A)

हिंदी साहित्य और सिनेमा

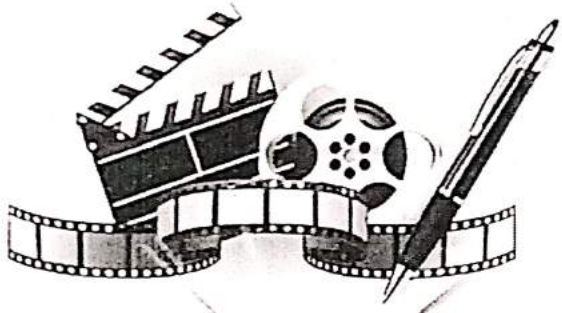

अतिथि संपादक :
डॉ. एस.आर. निंबोरे
प्राचार्य,
कला, वाणिज्य एवं विज्ञान महाविद्यालय,
आष्टी, तह. आष्टी, जि. बीड

विशेषांक संपादक :
प्रा. जे.एम. पठाण
हिंदी विभागाध्यक्ष,
कला, वाणिज्य एवं विज्ञान महाविद्यालय,
आष्टी, तह. आष्टी, जि. बीड

सहयोगी संपादक :
प्रा. एस.एम. खुडे
कला, वाणिज्य एवं विज्ञान महाविद्यालय, आष्टी
प्रा. ए.वी. टाळके
भगवान महाविद्यालय, आष्टी
प्रा. व्ही.वी. गव्हाणे
गांधी महाविद्यालय, कडा
डॉ. जी.वी. मंडलिक
ए.डी. महाविद्यालय, कडा
प्रा. एस.पी. पवार
भगवान महाविद्यालय, आष्टी

मुख्य संपादक :
डॉ. धनराज धनगर

This Journal is indexed in :
- UGC Approved Journal
- Scientific Journal Impact Factor (SJIF)
- Cosmos Impact Factor (CIF)
- Global Impact Factor (GIF)
- International Impact Factor Services (IIFS)
- Indian Citation Index (ICI)
- Dictionary of Research Journal Index (DRJI)

RESEARCH JOURNEY

SWATIDHAN PUBLICATIONS

Scanned by CamScanner

Scanned with OKEN Scanner

मार्क्सवाद और [illegible] संदर्भ पर भी उत्तराधुनिक ढंग से विचार किया जाए तो यह [illegible] है कि [illegible] संस्कृति की नई [illegible] है। परंपरागत संस्कृति का [illegible] और नई संस्कृति का [illegible] सांस्कृतिक क्रांति भी और परंपरा का [illegible] संस्कृति का [illegible] भी और अलग अस्मिता भी। एक [illegible] संस्कृति [illegible] और दूसरे स्तर पर उसके अपना इस [illegible] पर विचार किया है। सबसे सही बात यह है कि यहां [illegible] तार्किक ढंग से उसकी सभी [illegible] चिंतन किया गया है। साहित्य, जनसंचार, इतिहास, [illegible] आदि सभी [illegible] उत्तर आधुनिकता पर [illegible] होते हैं।

[illegible] के लिए उत्तर आधुनिक दो प्रकार से सोचने की चीज है एक [illegible] और दूसरा [illegible] पश्चिम का है। पश्चिम में [illegible] और [illegible] ने प्रचलित संस्कृति के विरुध्द एक समानांतर संस्कृति का [illegible] किया और [illegible] में यही संस्कृति उत्तर आधुनिकता की [illegible] भूमिका बन गई। [illegible] ने ठीक ही लिखा है कि एकवाद, [illegible], [illegible] तथा [illegible] पर आधारित साहित्य, कला एवं संस्कृति के सिध्दांतों पर प्रश्नचिन्ह लग गया। इन प्रश्नों और [illegible] की बौछार आई [illegible] और [illegible] के साहित्य और चिंतन को अपनी लपेट में लिया। भारत में इसकी [illegible] सुनाई देने लगी। इस प्रकार उत्तर आधुनिकता के दौर ने [illegible] चिंतन और व्यवहार के लिए स्वाभाविक, संपूर्ण, शाश्वत, अंतिम तथा [illegible] स्वीकार कर लिया गया था नकार दिया। यानी अब सब कुछ पोस्ट हो गया। [illegible] विचार और विचारधारा पोस्ट हो गई। पोस्ट इंडस्ट्रियलिज्म, [illegible], पोस्ट हिस्ट्री, पोस्ट मार्क्सिज्म। अब विचारकों ने इतिहास का भी अंत मान लिया। [illegible] और पोस्ट-पोस्ट माडर्निज्म की भी चर्चा शुरु हो गई। इसी दौर में [illegible] ने [illegible] (डिकंस्ट्रक्शन) का सिध्दांत प्रस्तुत किया [illegible] उत्तर आधुनिकता के बीच चिंतन में सबसे ज्यादा काम कर रहा था। उत्तर आधुनिकता और मानवाधिकार के मूल्य को दलित साहित्य में देख सकते हैं।

दलितों की सबसे बड़ी समस्या उनके मानवाधिकारों का हनन है। मनुष्य मात्र [illegible] के जो अधिकार होते हैं, उनसे उन्हें दूर रखना है। मनुष्य होने के [illegible] समाज में प्रत्येक के अपने कर्तव्य होते हैं। उसी तरह में प्रत्येक को

अन्यों की तरह समान सामाजिक अधिकार होते हैं। इन अधिकारों से दलितों को दूर रखना ही उनकी बड़ी समस्या है। बल्कि बिना किसी अपराध के सामाजिक कर्तव्यों को भली भाँति निभाते हुए भी समान सामाजिक अधिकारोंसे से वंचित करके उनका शोषण करना या उनके अधिकारों की लूट करना इस समस्या की जड है। इस सामाजिक लूट के मुख्य आयाम हैं-१) अन्यों की तरह उन्हें समान नहीं देखना २) मंदिर प्रवेश, शिक्षा आदि सामाजिक गौरव से दूर रखना, ३) शासन व राजनीति से दूर रखना, ४) जीवन की मौलिक सुविधाओं तथा खाने-पीने, ओढने और रहने से वंचित रखना, ५) अस्पृश्य समझ कर और समझाकर अपमान करना, ६) सतत उन्हें छोटापन का शिकार बनाना, ७) अन्य समाजों से उन्हें अलग जीने के लिए विवश करना, ८) विवाह, त्योहार आदि सामाजिक कार्यों से उन्हें दूर रखना आदि उन को प्राप्त मानवाधिकारों वंचित करके उनका शोषण करना दलितों के प्रति होनेवाले सामाजिक अन्याय के आयाम हैं। दलित चेतना का यह कहना है कि समाज के अन्य वर्गों के साथ इस प्रकार के समान अधिकारों की मांग करना और प्राप्त करना है। क्योंकी आज अनेक समस्याओं की जड आर्थिक अभाव है। युग-युगों से शोषण का शिकार हुए इन को प्रगती सिर्फ इनकी आर्थिक प्रगति पर निर्भर है। अपने अभावों से और कमजोरियों से ऊपर उठने के लिए कुछ ऐसे अधिकार चाहिए जिनकी सहायता से समाज के अन्य विकसित लोगों के साथ-साथ चले। इसलिए हमारे देश में दलितों के लिए अधिकार और आरक्षण और उनके समस्त प्रयासों से उन्हें मुक्त करने के लिए सत्ता के दुरहंकार से बचाने के लिए विशेष दलित कानून बनाया गया है। जब-जब इन अधिकारों से वंचित किया गया, सामाजिक अपमान का शिकार किया गया। दलित लेखक उनके प्रति सहज सहानुभूति दिखाते आये हैं। दलित आत्मकथाओं का मुख्य उद्देश व कथ्य इन्हीं मानवाधिकारों का संरक्षण है।

हिंदी दलित आत्मकथाकारों ने अपने जीवन घटनाओं के माध्यम से पाठकों से अवगत कराकर दलितों के अधिकारों की चेतना जगाने की कोशिश की है। मानव होने के नाते उन्हें समस्त अधिकार प्राप्त हैं। फिर भी दलितों की कमजोरियों के बहाने बाकी समाज के लोग उनका शोषण करते हैं। शिक्षा, रोजगार आदि से वंचित करके उन्हें साक्षात गुलाम बनाने की कोशिश पीढियों से करते करते आए हैं। दलितों को यह भी मालूम होने नहीं दिया कि उन्हें क्या-क्या अधिकार प्राप्त हैं। दलित आत्मकथाकारों ने अपने अनुभवों के माध्यम से दलितों को सचेत

Scanned by CamScanner
Scanned with OKEN Scanner

'RESEARCH JOURNEY' International E- Research Journal
Impact Factor - (SJIF) - 6.261, (CIF) - 3.452(2015), (GIF) - 0.676 (2013)
Special Issue 105 (A)- हिंदी साहित्य और सिनेमा
UGC Approved Journal
ISSN : 2348-7143
February-2019

अनुक्रमणिका

अ.क्र.	शीर्षक	लेखक/लेखिका	पृ.क्र.
1	सिनेमा और पटकथा लेखन	प्रा. जनतुल्लाखान पठाण	05
2	हिंदी साहित्य, समाज और सिनेमा	डॉ . मना मालोदे	09
3	सिनेमा और हिंदी साहित्य	डॉ . चित्रा थापणे	14
4	हिंदी साहित्य और सिनेमा	डॉ. पूर्वकांत दळवे	18
5	इक्कीसवीं सदी का सिनेमा	प्रा. एस .डी. मुडावर	21
6	हिंदी कथा साहित्य और सिनेमा	आर. के. देशपांडे	24
7	हिंदी साहित्य और सिनेमा	डॉ. विष्णु पल्हाणे	27
8	अपने देश में अपना सिनेमा : ... और	डॉ. मुस्तन्सन संदलिक	30
9	सिनेमा और पटकथा लेखन	डॉ. ए. बी . दळके	34
10	सिनेमा, अभिनय और नारी	प्रा. शुभांगी मुंढे	37
11	साहित्य, सिनेमा और समाज अंतःसंबंध	प्रा. पोपट जाधव	40
12	हिंदी सिनेमा और पटकथा लेखन	प्रा. अच्युत शिंदे	43
13	प्रेमचंद का साहित्य और सिनेमा	डॉ. संगीता आहेर	46
14	साहित्य और सिनेमा का संबंध	प्रा. एस. पी पवार	49
15	हिंदी साहित्य और सिनेमा	प्रा. बी. बी. जाधव	52
16	सिनेमा साहित्य और हिंदी	प्रा. कल्याणी जगताप	54
17	सिनेमा, समाज और हिंदी भाषा	डॉ. एस.सी. कासंडे	57
18	हिंदी साहित्य और सिनेमा का संबंध	डॉ. अमर चाथमोरे	59
19	हिंदी-मराठी साहित्य और सिनेमा	सीमा पाटील, डॉ.बी.आर.नले	62
20	हिंदी भाषा और सिनेमा का संबंध	साई दोळके	66
21	सिनेमा, साहित्य और हिंदी	प्रा. प्रकाश लहाने	70
22	सिनेमा, साहित्य और हिंदी	डॉ. सुभाष शिंदे	72

इस अंक के सभी अधिकार प्रकाशकने आरक्षित किये हैं। प्रकाशित आलेख पुनःप्रकाशित करने से पहले प्रकाशक एवं लेखक की संयुक्त लिखित अनुमती जरुरी है। प्रकाशित आलेखों में व्यक्त मंतव्य केवल लेखक के है, इन मंतव्यों से संपादक और प्रकाशक सहमत हो, यह जरुरी नहीं है। आलेख के संदर्भ में उपस्थित ओरिजिनलिटी (Originality of the papers) की जिम्मेदारी स्वयं लेखक की है।

\- संपादक

'RESEARCH JOURNEY' International E- Research Journal
Impact Factor - (SJIF) – 6.261, (CIF) - 3.452(2015), (GIF)–0.676 (2013)
Special Issue 105 (A)- हिंदी साहित्य और सिनेमा
UGC Approved Journal
ISSN : 2348-7143
February 2019

हिंदी साहित्य, समाज और सिनेमा

डॉ. दत्ता शिवराम साकोळे
प्राध्यापक एवं शोध निर्देशक
हिंदी विभाग, शि.म. ज्ञानदेव मोहेकर
महाविद्यालय कळंब, जि. उस्मानाबाद

जैसा जिवन होता है वैसी अनुभूती होती है, जैसी अनुभूती होती है वैसी अभिव्यक्ती होती है। साहित्यकार जिस युग में जीवन जिता है, उसका उसपर किसी ना किसी रूप में प्रभाव पड़ता है। साहित्य मनुष्य जीवन के चिंतन तथा मंथन की सत्य अभिव्यक्ति और सतत साधना का सुपरिणाम है। साहित्य का रचियता मनुष्य है और मनुष्य के लिए ही साहित्य है। सिनेमा को मनोरंजन और शिक्षा की दृष्टि से आधुनिक विज्ञान एक महत्वपूर्ण देन मानकर उसपर विचार करेंगे।

भारत सिने संसार का इतिहास सन 1930 के आसपास से आरंभ होता है। सन 1932 ई. में नी सारी पहली बोलती फिल्म 'आलम आरा' से लेकर आज तक बनी सभी फिल्मों का आकलन करने पर हम पाएंगे कि दोनों के विचार के धरती–आसमान का फर्क है। पहले फिल्में समाज और देश हित को ध्यान में रखकर बनाई जाती थी लेकिन आजकल ऐसा नहीं रह गया है। स्वतंत्रता से पूर्व हिन्दू–मुस्लिम के तनाव को दूर करने के लिए पृथ्वीराज कपूर ने 'दीवार' फिल्म बनाई थी जिसे देखकर जनता अपनी असद स्थिती को समझ गई थी। इससे पूर्व इन्होंने दीवार नाम से एक नाटक का मंचन किया था। जिससे प्रभावित होकर नेताजी सुभाषचंद्र बोस ने पृथ्विराज कपूर को मंच पर आकर गले लगाया था। पहली फिल्मों और नाटकों में जो कलात्मकता और परिपक्वता थी वह अब फिल्मों से नदारद होन लगी है। आज हमारी फिल्मों में यूरोपीय और अमेरिकी छाप दिखाई देती है और भारतीयता अहिस्ता–अहिस्ता गायब हो रही है। बस यही बात दिल को दहला देनेवाली है। ऐसी विषम परिस्थितियों में हिन्दी सिनेमा जगत से यह आशा कैसे की जा सकती है कि वह जनता का मार्गदर्शन करने में अपनी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। आज हिन्दी सिनेमा ने जो लक्ष्य चुना है वह भारतीयता से रहित है। सन् 1935 ई. में जब बंगला भाषा को मूर्धन्य साहित्यकार शरतचन्द्र चट्टोपाध्याय के उपन्यास देवदास पर फिल्म बनी थी उस समय स्वयं शरद बाबू सेट पर मौजूद थे। वह टकटकी लगाए देख रहे थे कि उनके उपन्यास की आत्मा का हनन तो नहीं हो रहा है। उन्होंने अपने उपन्यास की कथा का दुरुपयोग नहीं होने दिया था पी.सी. बरुवा ने अपनी समकालीन फ.नी. मुजुमदार से सिफारिश की थी कि वह शरद बाबू को फिल्म के लिए राजी कर लें। शरद बाबू इस शर्त पर तैयार हुए कि वे स्वयं उस समय सेट पर मौजूद रहेंगे जब कथा को फिल्माया जाएगा.... और पूरी फिल्म उनकी मौजूदगी में बनी। निर्देशक पी.सी. बरुवा को शरदबाबू के आगे नत होना पड़ा। यह फिल्म अपने जमाने की अन्य फिल्मों से हटकर बनी और मील का पत्थर साबित हुई। सन् 2002 में देवदास पर नई फिल्म बनी। इस नयी फिल्म देवदास में कहानी को तोड–मरोडकर उसका मूल तत्व गायब कर दिया गया। आज क्लासिक कथा पर फिल्म बनती है तो उस कहानी के कहानी की हत्या पहले ही